श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ डिसेंबर-2023

ऐनरोलमेन्ट नंबर 7 शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	चौदह पूर्वधर
(२)	नारकी
(३)	त्रस आदि जीवों की हिंसा
(४)	कुदरती घटना
(५)	आहारक
(६)	सुर-असुरो के
(७)	अपने नाम
(८)	असती पोषण
(९)	जयंति
(१०)	भावशुद्धि
(११)	संघातन नामकर्म
(१२)	तीर्थ
(१३)	विष वाणिज्य
(१४)	रथनुपुर
(१५)	सम्यक्त्वमोहनीय
(१६)	अंग
(१७)	चाकर
(१८)	क्षपक श्रेणी
(१९)	औदारिक
(२०)	परिभ्रमण

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	उत्तरकुरु
(२)	पुण्यार्थी
(३)	वादकला
(४)	शांतिनाथ भ.
(५)	हरिकूट, हरिस्सहकूट
(६)	कर्मसत्ता
(७)	केशवाणिज्य
(८)	भावड सेठ
(९)	विद्याधर
(१०)	द्रव्येन्द्रियाँ
(११)	इंगाल कर्म
(१२)	कार्मणशरीर
(१३)	पापभीरु
(१४)	वैर से
(१५)	नारकी जीव

(५)	सम्यक्त्वमोहनीय
(६)	खेतीवाडी
(७)	विद्याधर
(८)	उदर (पेट)
(९)	शकट
(१०)	प्रदक्षिणा
(११)	आदर
(१२)	एकेन्द्रिय
(१३)	औदारिक
(१४)	शरीर
(१५)	कटि प्रदेश
(१६)	प्रकंपित
(१७)	मुगुट
(१८)	इस तरह
(१९)	कम-ज्यादा
(२०)	नौकरी

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	आहारक
(२)	स्वर्ग के रथ
(३)	मैं भी
(४)	साठ

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	1
(२)	7	(७)	9
(३)	6	(८)	2
(४)	10	(९)	3
(५)	8	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	3
(२)	57 वर्ष
(३)	15
(४)	8
(५)	122
(६)	3 लाख
(७)	5
(८)	15
(९)	7
(१०)	132

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	5
(२)	×	(२)	13
(३)	✓	(३)	17
(४)	✓	(४)	1
(५)	×	(५)	8
(६)	×	(६)	24
(७)	✓	(७)	16
(८)	✓	(८)	11
(९)	✓	(९)	10
(१०)	×	(१०)	20

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______________________ जांचनेवाले की सही ______________________

प्रश्न - ८

१. रस वाणिज्य -> रस का व्यापर, यह रस वो मांसरस तथा मद्य और मद्यांग यानि मदिरा के अंग तथा मधु ले मद्य (शहद), मक्खन ये चार तो महाविगई है और ये भयंकर पाप-कर्मबंधन के कारण है, तथा वेशन ये तेल, दूध, दहि, घृत, गुड व शक्कर आदि रसवाली जो नरम चीजे है, उनका व्यापार, विक्रय करना वो भी त्याज्य है। चिकने रसवाली वस्तुओंके जहाँ वर्तन खुले रह जाय वहाँ भी छोटे बडे जीव आकर पडते हैं ये कुवाणिज्य है बहुत हिंसामय है। ऐसे रस वाली चीजोंका व्यापर करना, विक्रय करना त्याज्य है।

२. व्यापार में क्षेत्र शुद्धि -> जिस क्षेत्रमें अपना धर्म सुख से साध सके, कर सके और पैदाशभी अच्छी उस क्षेत्र व्यापार करना योग्य है। स्वदेश कहे जाने वाले क्षेत्रमें, जहाँ के बहुत से लोग पहचान के, हो, रिश्तेदार हो, जहाँ सत्यमार्ग के व्यवसायी। ऐसे व्यापारी हो ऐसे क्षेत्रमें व्यापार करना हितावह होता है। पर जहाँ रोगादि का उपद्रव हो, ~~जहाँ~~ परराज्य ~~से~~ का ऐसे क्षेत्र में व्यापार नहीं करना चाहिए। क्षेत्र शुद्धि का ध्यान रखना चाहिए।

३. विद्याधर मनुष्यों की श्रेणिया -> ३४ वैताढ्य पर ६८ विद्याधर मनुष्योंकी श्रेणियाँ है। वैताढ्य पर्वत के ऊपर विद्याधर मनुष्योंकी एवं आभियोगिक देवों की दो-दो श्रेणियाँ है। जंबूद्वीप में चौंतीस दीर्घ वैताढ्य पर्वत है। एक भरत क्षेत्रमें, एक ऐरावत क्षेत्रमें, और ३२ महाविदेह की ~~३२~~ विजयोमें। ३४ वैताढ्यपर ६८ विद्याधर मनुष्योंकी श्रेणियाँ है। भरतक्षेत्र के १ वैताढ्यपर २ श्रेणियोंके ११० नगर है, ऐरावत क्षेत्रके १ वैताढ्यपर 2 श्रेणियों के ११० नगर और महाविदेह के क्षेत्र के 32 वैताढ्य श्रेणियाँ ११० नगर(55+55) x 32 = 3520 नगर ११०+११० + 3520 = कुल नगर 3740। 34 वैताढ्यपर ६८ विद्याधर मनुष्योंकी श्रेणियाँ 3740 नगर

४. आहारक शरीर नामकर्म -> आहारक शरीर याने तीर्थंकर परमात्माके दर्शन करने के लिये ~~या~~ आगम सूत्र के अर्थ बोध के लिए अथवा अपने संशय दुर करने केलिए चौदह पूर्वधर बंधमुद्रीवाले एक हाथ प्रमाण वाले स्फटिक की भाँती पारदर्शी शरीर का निर्माण करते है वह आहारक शरीर कहलाता है यह शरीर किसीको दिखता है या किसीको नहीं भी दिखता। ऐसे आहारक शरीर बनाने के लिये चाहिए वो आहारक वर्गणा प्रदान करने वाला कर्म आहारक शरीर नामकर्म कहलाता है और यह शरीर केवल आहारक लब्धि संपन्न साधु ही बना सकते है।

५. अकंपित गणधर की शंका और समाधान -> कोई भी जीव मरकर परभव में नारकी होता नहीं है, कारण कि परलोक मे नरक के विषय में नारकी जीव नहीं हैं, ऐसा सोचने से नरक के अस्तित्व के बारे मे शंका अकंपित गणधर को हो गयी थी, पर प्रभु कहते है "नारके वै एष जायते; शूद्रान्नमश्नाति" इस वेद वाक्य अर्थ है-जो ब्राम्हण शूद्र जाति के मानव का अन्न खाता है वो नारकी होता है, ये वेदपद नरक के अस्तित्व को सूचित करते है। 'न हवै प्रेत्य नरके नारका सन्ति" इन वेदपदों का अर्थ भी यही है कि जो उत्कृष्ट पाप करते है वो नारकी होते है, पर शाश्वत रहते नहीं, नरक का आयुष्य पूर्ण होनेपर वहाँसे दुसरी गतिमें जाते है नारकी जीव मरकर दुसरे भवमें नारकी होते नहीं है। दुसरे भव में जाते है इससे तुझे नारकी का अभाव समझना नहीं, और प्रभु के वचनोको सुनकर शंका दुर होनेसे, ३०० विद्यार्थी शिष्यो सहित प्रभुकेपास दिक्षा ग्रहण करते हैं।